(1)

प्रश्न :- हिन्दी साहित्य का इतिहास का काल-विभाजन

विषय-प्रवेश :— हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन की परम्परा सन् 1839 में प्रतिष्ठित फ्रांसीसी विद्वान Garsa the Tasi (गार्सा द तासी) द्वारा लिखित The Literature Hindustani से प्रारम्भ होती है, और तभी से उसके काल-विभाजन की समस्या उत्पन्न हो गई। कारण यह रहा कि इतिहास लेखन के लिए अपेक्षित सामग्री का अभाव बराबर बना रहा, यह समस्या आज तक बनी हुई है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास को आरम्भ कब से माना जाय?

हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन की परम्परा :— हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन कई विद्वानों ने किया है, इसमें काफी मतभेद है। मतभेद का कारण यह है कि प्रत्येक विद्वान ने काल-विभाजन के लिए अपने अलग सिद्धान्त निश्चित किए हैं।

गार्सा द तासी के ग्रन्थ 'इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐन्दूई ऐन्दुस्तानी' के द्वितीय संस्करण की भूमिका में शताब्दियों में होने वाले कवियों की गणना की गई है, जिससे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकर्ता के मन में शताब्दियों के अनुसार काल-विभाजन करने वाली बात थी। इस प्रकार काल-विभाजन के प्रयास का संकेत निश्चयात्मक रूप से इसी ग्रन्थ में उपलब्ध होता है।

तदुपरान्त हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन का क्रम चल पड़ा; इस क्रम में प्रमुख नाम है - डॉ० जार्ज ग्रियर्सन द्वारा लिखित वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान, मिश्रबन्धु (रामबिहारी, श्यामबिहारी, शुकदेवबिहारी) द्वारा लिखित मिश्रबन्धु विनोद (चार भागों में), रामनरेश त्रिपाठी कृत कविता कौमुदी (पाँच भागों में), एफ ई के द्वारा लिखित A Sketch of Hindi Literature, F.E.K का A History of Hindi Literature, वियोगी हरि (ब्रजमाधुरी सार) तथा पं० कृष्णशंकर शुक्ल, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी कृत 'हिन्दी साहित्य विमर्श'।

आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल ने युगीन प्रवृत्तियों को लक्ष्य करके सन् 1929 में हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत किया, इनके बाद प्रवृत्तियों को लक्ष्य करते हुए कई अन्य विद्वानों ने काल विभाजन किया। इनमें डॉ० राम कुमार वर्मा, बाबू श्यामसुन्दर दास, राहुल सांकृत्यायन तथा डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के नाम प्रमुख हैं। इस दिशा में कतिपय संस्थागत प्रयास भी किए गये हैं, इनमें उल्लेखनीय हैं: भारत सरकार की ओर से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागान्तर्गत 'व्याकरण और इतिहास' विभाग द्वारा प्रस्तुत इतिहास तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी से प्रकाशित हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास इत्यादि 19 खण्ड हैं। इनमें विभाजन का ढाँचा आचार्य शुक्ल कृत काल विभाजन के ही अनुरूप है।

२

इनके अलावा कतिपय विद्वानों ने हिंदी साहित्य
विवेचनात्मक एवं प्रवृत्त्यात्मक इतिहास भी प्रस्तुत किए हैं। इन ग्रंथों में उपलब्ध सामग्री की नवीन दृष्टियों से समीक्षा की गई है। काल-विभाजन सम्बन्धी कोई मौलिक बात नहीं की गई है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत काल-विभाजन :— आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत काल-विभाजन सर्वाधिक मान्य है जो निम्नलिखित प्रकार—

(१) आदिकाल (वीरगाथा काल संवत् १०५० से १३७५ तक)
(२) पूर्वमध्यकाल (भक्तिकाल संवत् १३७५ से १७०० तक)
(३) उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल संवत् १७०० से १९०० तक)
(४) आधुनिक काल (गद्य काल संवत् १९०० से आज तक)

कतिपय विद्वानों ने आचार्य शुक्ल कृत काल-विभाजन के दोषों के प्रति इंगित करते हुए उसकी आलोचना की है, परन्तु उसका ऐसा संशोधित रूप जो सर्वमान्य हो, कोई भी प्रस्तुत नहीं कर पाया है।

काल-विभाजन की समीक्षा! — राजनीतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी साहित्य का इतिहास पाँच काल खण्डों में विभाजित किया जा सकता है — (१) मोहम्मद गोरी के आक्रमण काल से लेकर विक्रम के चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक (इसका पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा।)

(२) विक्रम की चौदहवीं शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शताब्दी तक (अकबर के शासन काल तक)

(३) सत्रहवीं शताब्दी से लेकर विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी तक

(४) उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण से लेकर सन् १९४७ तक (स्वतंत्रता प्राप्ति तक)

५. स्वतंत्रता प्राप्ति (सन् १९४७) से आज तक

अब हम उक्त काल-खण्डों के नामकरण एवं उनके सीमा-निर्धारण पर विचार करते हैं। आचार्य शुक्ल ने पूर्व-मध्य काल को भक्ति काल कहा है, इसके नामकरण के सम्बन्ध में कोई विवाद नहीं है।

उत्तर मध्य-काल का नामकरण एवं उसका सीमा-निर्धारण दोनों ही विवाद का विषय रहे हैं। मिश्र बन्धुओं (राम बिहारी, श्याम बिहारी, शुकदेव बिहारी) ने इसे अलंकृत काल कहा तथा अन्य कई विद्वानों ने इसको श्रृंगार काल कहा है।

इस काल में यद्यपि अभिव्यक्ति की प्रधानता रही, तथापि इसका अधिकांश प्रतिपाद्य रीति निरूपण अथवा रीति शास्त्रीय विवेचन रहा, अन्यथा इसी युग के तो वे कवि वीर-काल के प्रणेता अथवा रीति काल की शैली पर वीर रस का

निरूपण क्यों करते? यह बात और उदाहरण है, इस काल के कवियों की प्रवृत्ति ~~अधिकतर~~ कवित्व की ओर कम, आचार्यत्व निरूपण के प्रति अधिक रही। इस प्रकार इस काल में शृंगार-वर्णन साध्य था और रीति काव्य शास्त्र निरूपण साधन था। आचार्य शुक्ल ने साध्य-साधन के भेद को पहचाना था और इसी आधार पर (साधन के आधार पर) इस काल को 'रीति काल' नाम दिया, जो हमारे विचार से सर्वथा उपयुक्त है। रीति काल के अंतर्गत प्रायः सभी की रचनाएँ तथा विशिष्ट कवि की रीति परक कृतियाँ आसानी से आ जाती हैं। अब रह जाती है -

रीतिकाल की सीमावधि के निर्धारण की समस्या - आचार्य शुक्ल ने चिन्तामणि त्रिपाठी को रीति काल का प्रथम आचार्य माना है और इस आधार पर रीति काल का प्रारंभ काल संवत् 1700 माना है। दूसरी ओर बाबू श्यामसुन्दर दास प्रभृति विद्वान केशवदास को रीति काल का प्रथम आचार्य मानते हैं और इस प्रकार वे संवत् 1650 से रीति काल का प्रारंभ मानते हैं। भक्ति धारा के समानान्तर भक्ति काल के अंतिम चरण में भक्ति काल की कालावधि में ही नाभादास, नंददास आदि कवियों की रचनाओं में रीतिकाल की विशेषताओं के बीज दृष्टिगोचर होने लगे थे और कृपाराम ने हिततरंगिणी लिखकर काव्यांगों का निर्देश कर दिया था। आचार्य केशवदास के आविर्भाव से ... महाकाव्य का सृजन नहीं था। केशवदास ने रामचन्द्रिका काव्य एवं महाकाव्य का अनुगमन करते हुए अलंकार सम्प्रदाय का ... की रचना की तथा रसिकप्रिया की रचना की, इसी कारण आचार्य शुक्ल ने केशवदास को रीति ग्रंथों की रचना करते हुए भी भक्ति काल के फुटकल कवियों के अंतर्गत रख दिया। [वास्तविकता यह है कि] और इसमें इस बात को भक्ति काल और रीति काल की संधि काल है और इसमें इस मत है कि केशवदास का सृजन भक्ति काल और रीति काल में किसी भी के अंतर्गत रखा जा सकता है। शुक्ल जी आदि जो रीति काल का आरंभ मानते हैं उनका दोनों कालों में किसी भी के अंतर्गत ... चिन्तामणि त्रिपाठी से रीति काल का आरंभ मानते हैं। उनका कथन है कि "यद्यपि केशवदास ने हिन्दी में सर्वप्रथम रीति ग्रंथ का प्रणयन किया, तथापि रीति ग्रंथों की परम्परा उनके पश्चात् वर्षों बहुत कुछ इस प्रकार है - यद्यपि रीति ग्रंथों की परम्परा उनके भिन्न आदर्श ले कर केशवदास के बाद चिन्तामणि त्रिपाठी से प्रारंभ हुई और वह भी भिन्न आदर्श ले कर। केशवदास अलंकार सम्प्रदाय के अनुयायी थे, जबकि चिन्तामणि त्रिपाठी एवं अन्य परवर्ती रीति-कवि रस-सम्प्रदाय के अनुयायी थे।" इस आधार पर संवत् 1700 से मानते हैं।

रीति काल का प्रारंभ संवत् 1700 से मानने वालों विद्वानों के इस वर्ग के विद्वान रीति काल का प्रथम आचार्य कवि केशवदास को मानते हैं। उनका कथन इस प्रकार है - "यद्यपि केशवदास के बाद रीति ग्रंथों की परम्परा नहीं चली, तथापि बहुत कुछ इस प्रकार है - यद्यपि केशवदास के पश्चात् ... एवं उनके आदर्श पर रीति ग्रंथों की रचना की परम्परा नहीं चली, तथापि इसी रीति का मार्ग प्रशस्त करने वाले आचार्य केशवदास ही थे।" इसी आधार पर इस वर्ग के विद्वान रीति काल का आरंभ 1650 से मानते हैं।

Scanned with CamScanner

हमारे मत से परवर्ती विद्वानों का मत ही अधिक समीचीन एवं युक्तियुक्त है। केशवदास ने ही लक्षण-उदाहरण की शैली पर सर्वप्रथम लक्षण-ग्रंथ लिखकर हिंदी ~~रचना~~ रीति-रचना का सूत्रपात किया। अतः उन्हें ही रीति काल का प्रथम कवि एवं रीति काल के प्रवर्तक माना जाना चाहिए अतएव रीतिकाल का प्रारंभ संवत् 1650 से माना जाना चाहिए।

आधुनिक काल में खड़ी बोली गद्य का सर्वांगीण विकास हुआ है और गद्य रचना आधुनिक काल की बात है कि आधुनिक काल की कविता का झुकाव भी क्रमशः गद्यात्मकता की ओर होता गया है। आचार्य शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्य काल कहा है, हमारे विचार से यह नाम सर्वथा उपयुक्त है।

आधुनिक काल का आरंभ अंग्रेजी शासन की प्रतिष्ठा के साथ माना जाता है। इस प्रकार इसका सीमा निर्धारण [illegible] न होगा भी निर्विवाद है। जहाँ तक बात [illegible] के साथ (संवत् 1900) रीति आधुनिक काल के आरंभ के साथ रीति काल का अंत हो जाता है।